गुप्तकाल को सांस्कृतिक विकास का युग कहा जाता है। निःसंदेह इसने संस्कृति के प्रत्येक पक्ष को प्रभावित किया जिसके अन्तर्गत कला, साहित्य, स्थापत्य एवं विज्ञान के क्षेत्रों में अभूतपूर्व विकास दिखाई देता है।

स्थापत्य कला

गुप्तकालीन कला मुख्यतः धर्म से प्रभावित थी। स्थापत्य कला के क्षेत्र में मन्दिरों का निर्माण सबसे महत्वपूर्ण है। पहली बार मन्दिरों का निर्माण इस काल की मुख्य विशेषता है। गुप्तकालीन मन्दिर सामान्यतः चबूतरों पर निर्मित होते थे। इनमें गर्भगृह, सभाभवन, छपरी तथा शिखरयुक्त छतों का निर्माण इनके तकनीकी विकास का सूचक है। इस काल के प्रसिद्ध मन्दिरों में देवगढ़ का दशावतार, तिगवाँ का विष्णु, सिरपुर का लक्ष्मण, एरण का वाराह एवं विष्णु, अन्तर्वेदी का सूर्य, नचनाकुठार का शिव पार्वती तथा नागौर एवं भितरगाँव के मन्दिर प्रमुख हैं। देवगढ़ का दशावतार मन्दिर पंचायतन शैली का श्रेष्ठ उदाहरण है। शिखर निर्माण का प्रथम प्रमाण इसी मन्दिर से प्राप्त होता है।

→ गुप्त काल में अनेकों जैन मन्दिर, बौद्ध स्तूपों, चैत्यों एवं विहारों का निर्माण हुआ। सारनाथ का धामेख स्तूप तथा बाघ एवं अजन्ता की गुफायें इसका उदाहरण है।

मूर्तिकला — गुप्तकालीन मूर्तिकला भी धर्म से प्रभावित थी। मूर्तिकला संयत और नैतिक है। इसमें सजीवता तथा मौलिकता मिलती है। मूर्तियाँ मुख्यतः हिन्दू, बौद्ध एवं जैन तीर्थंकरों की निर्मित की गई मथुरा, सारनाथ एवं पाटलिपुत्र मूर्तिकला के केन्द्र थे। इस कला के श्रेष्ठ उदाहरण शेषशायी विष्णु की मूर्ति, वाराह एवं शिव की मूर्ति, सारनाथ एवं बौद्ध प्रतिमा प्रमुख है।

चित्रकला — चित्रों में रंगो, रेखाओं के प्रयोग भावों एवं विषयों के चित्रीकरण प्रभावशाली ढंग से किये गये हैं। गुप्तकालीन चित्रकला के प्रसिद्ध उदाहरण ~~अजं~~ अजन्ता एवं बाघ की गुफायें हैं। अजन्ता की गुफा में उच्चवर्गीय सम्पन्नता के दर्शन होते हैं, वहीं बाघ के ~~चित्रों~~ चित्रों, मानव के लौकिक जीवन की झाँकी मिलती है।

शिक्षा एवं साहित्य — गुप्तकाल विविध शिक्षा केन्द्रों के कारण प्रसिद्ध हुआ परिणामस्वरूप संस्कृत भाषा एवं साहित्य का विकास परिलक्षित होता है। संस्कृत भाषा अभिजात वर्ग की भाषा बनी और मुद्राओं एवं अभिलेखों में प्रयोग होने लगा। धार्मिक ग्रन्थों, नाटकों एवं प्रशस्तियों में इस भाषा का प्रयोग हुआ।

गुप्तकालीन लौकिक साहित्य के अन्तर्गत कालिदास के ऋतुसंहार, मेघदूत, कुमारसम्भव, रघुवंश जैसे महाकाव्य तथा अभिज्ञानशाकुन्तलम, विक्रमोर्वशीयम, मालविकाग्निमित्रम, विशाखदत्त कृत मुद्राराक्षस एवं देवीचन्द्रगुप्तम्, वात्स्यायन का कामसूत्र, भास की स्वप्नवासवदत्ता, अमर सिंह की अमरकोष, विष्णुशर्मा की पञ्चतन्त्र, आर्यभट्ट की आर्यभट्टीयम, वराहमिहिर की बृहत संहिता आदि ग्रन्थों ने गुप्तकालीन साहित्य को समृद्ध किया।

इसी काल में विभिन्न पुराणों, स्मृतियों की रचना एवं महाभारत तथा रामायण का अन्तिम रूप से संकलन हुआ। इस काल की प्रसिद्ध प्रशस्तियाँ प्रयाग प्रशस्ति हरिषेण एवं मन्दसौर प्रशस्ति वासुल ने रची

दर्शन गुप्तकाल में भारतीय दर्शन की प्रमुख विशेषता षड्दर्शन का विकास हुआ और हिन्दु दर्शन में अनेक ग्रन्थों की रचना हुई। इसी समय सांख्य शास्त्र, न्यायशास्त्र, न्यायवर्तिका तथा जैमिनीय सूत्र की रचना हुई और महायान बौद्ध धर्म के अन्तर्गत विभिन्न दार्शनिक विचारधारा और नवीन धार्मिक सम्प्रदायों का उदय हुआ।

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी गुप्तकाल में विज्ञान के क्षेत्र में सर्वाधिक प्रगति गणित और ज्योतिष के क्षेत्र में हुई। आर्यभट्ट ने यह प्रमाणित किया कि पृथ्वी गोल है और अपनी धुरी पर घूमती है।

Scanned with CamScanner

वाराहमिहिर ने ज्योतिष विज्ञान ~~को महत्वपूर्ण~~ के महत्वपूर्ण तत्वों की विवेचना पंचसिद्धान्तिका बृहत्संहिता, बृहद्जातक एवं लघु जातक में वर्णित की। फलित ज्योतिष पर कल्याणवर्मा ने सारावली नामक ग्रन्थ लिखा। नागार्जुन ने रस चिकित्सा का आविष्कार किया और धातुओं के रासायनिक प्रयोग से चिकित्सा विधि को सरल बनाया चिकित्सा शास्त्र के प्रमुख विद्वान धन्वतरि ने आयुर्वेद को सम्पन्न बनाया

इस काल की धातु कला का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण मैहरौली का लौह स्तम्भ और सुल्तान गंज की बौद्ध प्रतिमा है।

निश्चित रूप से गुप्तकाल कला, साहित्य, एवं वैज्ञानिक तकनीक की समृद्धि का विशिष्ट काल है जो अपने संसाधनों के आधार पर पर्याप्त विकास करने में सफल रहा।

Scanned with CamScanner

गुप्तकालीन सांस्कृतिक उपलब्धियों के आधार पर विभिन्न विद्वानों ने गुप्तकाल को भारतीय इतिहास का स्वर्णयुग कहा है जिसे एक विशिष्ट विचारधारा के इतिहासकारों ने इस आधार पर मान्यता दी है कि गुप्त राजाओं ने भारत में राजनीतिक एकता की स्थापना की, विदेशियों को पराजित किया, प्रशासनिक व्यवस्था कायम की। धर्म, कला ज्ञान विज्ञान को प्रोत्साहन दिया।

परन्तु अन्य निष्पक्ष इतिहास गुप्त काल को स्वर्ण युग की संकल्पना ~~यूटोपिया~~ को नहीं मानते ~~(काल्पनिक अवधारणा) से सम्बोधित नहीं करते~~

वा~~स्तविक अर्थों में~~ स्वर्णयुग की संकल्पना मात्र एक यूटोपिया (काल्पनिक अवधारणा) था मिथक ही है। ~~इस प्रकार की संकल्पना स्थापित होना तो दूर की बात~~ वस्तुतः स्वर्ण युग की संकल्पना में भौतिक एवं आध्यात्मिक पक्ष के समग्र विकास को प्रस्तुत किया जाता है जहाँ न केवल सामाजिक वर्गीकरण को अस्वीकृत अपितु विभिन्न आर्थिक साधनों की प्राप्ति में समता की भावना स्थापित की जाती है। यदि यह पक्ष किसी भी कालखण्ड में स्थापित होगा तो वह स्वर्ण युग की संकल्पना में स्थापित हो सकता है अन्यथा नहीं।

Scanned with CamScanner

गुप्तकालीन साम्यताओं में यह अवशेष बिल्कुल भी प्राप्त नहीं होते। अतः वास्तव में यह स्वर्णयुग नहीं था। कुछ इतिहासकारों ने इसे राष्ट्रीयता के पुनरोत्थान का काल माना है परन्तु विवेचना के पश्चात यह निष्कर्ष निकलता है कि "गुप्तों ने राष्ट्रीयता की पुनरोत्पत्ति बल्कि राष्ट्रीयता ने गुप्तों की पुनरोत्पत्ति की।" गुप्त शासक राजनीतिक एकता स्थापित करने में असफल रहे। यह युग सामन्ती साम्यताओं की स्थापना, दास प्रथा, बेगार प्रथा अस्पृश्यता, बाल विवाह, सतीप्रथा, सामाजिक तनाव एवं विषमताओं के लिये जाना जाता है। यद्यपि सामन्ती प्रभाव के कारण राजकीय कला का विकास हुआ परन्तु लोक कला विकसित नहीं हो पायी।

नगरीय केन्द्रों का ह्रास हुआ, वे ग्राम में परिवर्तित हो गये। उद्योग धन्धे एवं व्यापार सीमित हो गये। सिक्कों का प्रचलन कम हो गया। स्वर्ण सिक्कों में खोट की मात्रा बढ़ गयी। सिक्कों की गतिशीलता समाप्त हो गयी। इस प्रकार यह काल आर्थिक समृद्धि का नहीं अपितु आर्थिक विपन्नता का युग ज्यादा दिखाई देता है।

Scanned with CamScanner

इतिहासकारों का एक वर्ग सांस्कृतिक उपलब्धियों के आधार पर इसे कला, साहित्य, स्थापत्य का स्वर्णयुग मानता है परन्तु वास्तविक अर्थों में देखा जाये तो कला, साहित्य, स्थापत्य क्या आमजीवन की समृद्धि का सूचक है?

विवेचना के पश्चात यह कहा जा सकता है कि स्वर्ण युग की अवधारणा वर्तमान में जनसाधारण के लिये तो प्रतीत नहीं होती तथा कथित राजनीतिक एकता, हिन्दु पुनर्जागरण, कालिदास, भारवि, देवगढ़, मित्रगाँव अजन्ता और बाघ जैसी उपलब्धियों के पीछे वे लोग पिसते है जिनके गीत गाने के लिये कोई हरिषेण नहीं होता।

Scanned with CamScanner